

मर्क मेरी मर्क - आओ-आओ-उम्बे मर्क

द्वार खड़े मैया - तुम्हें पुकारें
 अँसुअन जल से चरण पखारें
 आये लँगुरिया - सब मिलन द्वारे
 आये शरण जो तुमने तारे

मर्क मेरी मर्क ---

अरज हमारी सुनो भवानी
 तुम जगजननी - जगकल्याणी
 शरण तुम्हारी जो भी आये
 मन वांछित फल तुमसे पाये -- मर्क मेरी ---

आज बना दो बिगड़ी हमारी
 तुम समान नहीं, कोई मेहतारी
 कौन सों काज - कठिन जगमाता
 तुम तो हो शक्ति की दाता -- मर्क मेरी ---

शुम्भ - निशुम्भ - दानव जो मारे
 सब देवों के कष्ट सम्हारे
 शक्ति बनकर घर में आई
 घर-घर में जो सुशियाँ दवाई

मर्क मेरी ---

जब- जब मैया- तुम्हें पुकारा
 तब- तब तुमने दिया सहारा
 ऐसी घड़ी कठिन की आई
 चिंता बनकर हिय में दृढ़-

मर्क- मेरी- मर्क- ...

जगमग- जगमग- ज्योत जलाऊँ
 आठों पैहर- दरस तेरे पाऊँ
 मैया हिय- में- आन विराजो
 हम दुखियों के काज सम्हारो

मर्क- मेरी- मर्क- ...

बैठे आस लगाये द्वारे
 जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे
 अब लग चूक करो न भाई
 सदा सहाय करेंगी माई

मर्क- मेरी- मर्क- ...

दास "श्री बाबा श्री" चरण गहें लोरे
 बिगड़े काज सम्हारो मोरे
 सत्य सनातन धर्म बचाओ

दौड़ सिंगासन दौड़ लगाओ- मर्क- मेरी...